न्यू जैन मार्बल्स द्वारा आयोजित 'तेरापंथ' महासभा में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–28.03.2017, समय–पूर्वाह्न–11:00 बजे, स्थान– एस॰के॰ मेमोरियल हॉल, पटना)

माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, आदरणीय आचार्य महाश्रमण जी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जैन जी, 'तेरापंथ' महासभा के अध्यक्ष श्री किशन डाकलिया जी, प्रियवर टीकमचन्द्र सेठिया जी, राजकुमार दफ्तरी जी, तनसुख वेग जी, कार्यक्रम में उपस्थित आदरणीय सभी साधु एवं साध्वीगण, तेरापंथ के पदाधिकारी एवं अनुयायीगण, आगत अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

आदरणीय आचार्य महाश्रमण जी के बिहार–परिभ्रमण के सन्दर्भ में आज आयोजित कार्यक्रम में पहुँचकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आचार्य महाश्रमण जी की अहिंसा–यात्रा का अभिनन्दन करने का मुझे दूसरी बार सौभाग्य मिला है। किशनगंज में भी महाश्रमण जी की अहिंसा–यात्रा के क्रम में इनका सानिध्य प्राप्त करने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ था और अब जब ये दूसरी बार बिहार आए हैं, तो हम इनका पूरे बिहार की तरफ से हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

मित्रों, आचार्य श्री की अहिंसा–यात्रा नैतिक क्रांति की एक मशाल बनकर मानवता को अध्यात्म के प्रशस्त पुण्य पंथ पर सतत् अग्रसर होने की प्रेरणा दे रही है। जैन श्वेताम्बर मुनि आचार्य महाश्रमण जी ने अपनी अहिंसा–यात्रा की शुरूआत विगत् 9 नवम्बर, 2014 को दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले से की एवं लगभग 15000 किलोमीटर से भी अधिक की पद–यात्रा करते हुए 27 मार्च को बिहार पहुँचे हैं। इन्होंने भगवान महावीर की जन्मस्थली का भी दर्शन किया है। इनकी इस यात्रा से बिहारवासियों में एक नयी आध्यात्मिक चेतना का पुनरोदय हुआ है।

बिहार ज्ञान, कर्म, चरित्र, नैतिकता, दर्शन, धर्म –सबसे परिपूर्ण एक विपुल वैभवशाली और गौरवशाली प्रदेश रहा है। बिहार प्रदेश जैन और बौद्ध धर्मों का तो जन्मस्थल ही रहा है। सिक्खों के दशमेश–गुरू गुरू गोविन्द सिंह जी के जन्मोत्सव को इस वर्ष 'प्रकाश पर्व' के रूप में आयोजित कर, बिहार ने पूरी दुनियाँ के सामने आतिथ्य के प्रति अपनी गहरी निष्ठा को प्रकट किया। इस आयोजन के समापन में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी पटना आए थे और इस भव्य आयोजन के लिए मुख्यमंत्री जी एवं सभी बिहारवासियों को बधाई दी थी।

जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 22 की मोक्ष–स्थली बिहार एवं झारखंड की एकीकृत धरती रही है। 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर वर्द्धमान सहित 5 तीर्थंकरों की जन्म–भूमि भी बिहार की पावन भूमि रही है। वर्द्धमान महावीर जैन धर्म और दर्शन को उत्कर्ष दिलाने में सर्वश्रेष्ठ रहे। तत्कालीन समाज में उत्पन्न असमानताओं और विसंगतियों का विरोध कर उन्होंने सामाजिक समरसता और भाईचारा को बढ़ाने का काम किया। अभिवंचित वर्ग के लोगों और स्त्रियों के लिए उन्होंने मोक्ष के द्वार खोल दिये। जैन धर्म के चार सूत्रों –अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह में उन्होंने ब्रह्मचर्य को जोड़कर आत्मशुद्धि और आचारशुद्धि को और अधिक व्यापकता प्रदान की। जैन धर्म को जैन–दर्शन के रूप में प्रतिष्ठापित करनेवाले भगवान महावीर ही थे। यही कारण है कि उन्हें जैन–धर्म और दर्शन का प्रवर्त्तक स्वीकार किया गया।

आज सम्पूर्ण विश्व हिंसा और आतंकवाद के खतरों से त्रस्त है। आज सभी आध्यात्मिकता की ललक में पुनः भारतवर्ष की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। जीवन का सदुपयोग कैसे हो? –इस विषय में हमारे राष्ट्रसंतों और महात्माओं ने अपने संदेशों से बराबर हमारा मार्ग–दर्शन किया है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अपनी प्रज्ञा और दार्शनिक चिन्तनों से आध्यात्मिक उन्नयन का सुगम रास्ता हमें

बताया है। आचार्य महाश्रमण जी भी बराबर कहते हैं कि संसार में आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक विकास के बिना किसी भी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव नहीं। इनके मार्ग–दर्शन में 'मर्यादा महोत्सव' भी प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। 'मर्यादा महोत्सव' के एक कार्यक्रम में किशनगंज में मैं भी शामिल हुआ था। इसमें आचार्य जी ने जिन छोटे–छोटे व्रतों की प्रतिज्ञा अपने अनुयायियों से करायी थी, उनसे सांसारिक जीवन में मनुष्य के विकास का मार्ग सहज रूप से प्रशस्त होता है।

मित्रों, आप सभी जानते हैं कि हमारे मुख्यमंत्री जी भी लगातार जन–जीवन से जुड़ाव और जन–समस्याओं को नजदीक से देखने–समझने के उद्देश्य से कई बार लंबी यात्राओं पर निकलते रहते हैं। मुझे लगता है, महाश्रमण जी की लंबी अहिंसा–यात्रा जब बिहार पहुँची है, उस अवसर पर अखिल भारतीय अणुव्रत महासमिति द्वारा 'अणुव्रत पुरस्कार' मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी को दिये जाने का निर्णय अत्यन्त सार्थक और समीचीन है। नीतीश जी यात्रा–धर्म का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हैं। ऐसे धीर पथिक को महाश्रमण जी की अहिंसा–यात्रा के मौके पर सम्मानित किया जाना बहुत ही उचित और प्रशंसनीय है। मुख्यमंत्री की शराबबंदी की पहल से समाज के हर वर्ग का कल्याण हुआ है। प्रधानमंत्री जी ने भी मुख्यमंत्री की इस पहल की सराहना की थी। मैं नीतीश जी को यहाँ सम्मानित किए जाने के अवसर पर, अपनी तथा समस्त बिहारवासियों की तरफ से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

मित्रों, महाश्रमण जी महावीर वर्द्धमान की जिस जन्मस्थली का दर्शन कर लौटे हैं, वहीं पर बिहार सरकार का एक सरकारी उपक्रम ''प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली'' कार्यरत है। आज से कुछ दिनों पूर्व, संस्थान की अधिष्ठात्री समिति के अध्यक्ष के नाते राजभवन में मैंने एक बैठक बुलाई थी। यह संस्था प्राकृत एवं जैन धर्म तथा इसके अहिंसा के सिद्धांतो को लेकर एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन एवं शोध

संस्था के रूप में विकसित की जा सकती है। मैंने इसके द्वारा प्रकाशित कई बहुमूल्य पुस्तकों को देखा है। संस्थान द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें–आचार्यश्री को भेंट करने हेतु मैं अपने साथ लाया हूँ। मुझे विश्वास है कि संस्थान को आचार्यश्री का यथोचित मार्गदर्शन व आर्शीवाद मिलेगा। इससे भगवान महावीर, प्राकृत भाषा और जैन धर्म के संदेशों के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक सार्थक संदेश भी जायेगा।

मित्रों, सन् 1958 में राष्ट्रसंत और अणुव्रत प्रणेता आचार्य तुलसी जी का कानपुर में चतुर्मास हुआ था। इस वर्ष के शुरूआती जनवरी महीने में वहाँ भी 'मर्यादा महोत्सव' आयोजित हुआ था। कानपुर मेरी जन्मभूमि है और आज बिहार मेरी कर्मभूमि बना है। यह महज संयोग नहीं, बल्कि मैं इसे अपना परम सौभाग्य मानता हूँ। मैं बिहार की पावन धरती पर आप सभी जैन धर्मावलम्बियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।